

नारायण जे नाम जो, धरियो जिनि ध्यानु
कोरे कसे कढियो, तनि अंदर माँ अभिमानु
सामी रहनि साफ सदा, पाए गुर गियानु,
तनी खे भगिवानु, मालिमु मंड्रोई थियो.

महाकवि सामी जी कहते हैं जिन लोगों ने नारायण का, भगवान का नाम अपने हृदय में धारण कर लिया है, राम-नाम का स्मरण किया है, उन्होंने अपने हृदय से अहंकार कुरेद कर निकाल दिया है। ऐसे जीव सतगुरु से ज्ञान ग्रहण कर सदा ही निर्मल और पवित्र जीवन बिताने लगे हैं। फलस्वरूप वे अपने हृदय में ही परमेश्वर की अनुभूति करने लगे हैं। वे मन ही मन परमेश्वर के दर्शन करने लगे हैं।

मनुष्य जीवन में या आध्यात्मिक क्षेत्र में नाम की बड़ी महिमा है। परमेश्वर की प्राप्ति के लिए ज्ञानमार्ग, योगमार्ग, कर्ममार्ग आदि की अपेक्षा नाममार्ग सरल और सहज माना गया है। अनेक संतों ने साधारण/सामान्यजनों के लिए नाम-साधना को सुलभ बताया है। कलियुग में मनुष्य अनेक व्याधियों, चिंताओं एवं तनावों आदि से ग्रस्त रहता है। वह कहीं न कहीं शांति, समाधान, संतोष और आनंद की तलाश में रहता है। ऐसे मनुष्यों के लिए संतों ने नाम-स्मरण रूपी एक चिंतामणि अथवा कल्पवृक्ष प्रदान किया है। राम का नाम-स्मरण हृदय से करने से सामान्यजनों का जीवन सुधर जाता है। हृदय की गहराइयों से नाम-स्मरण करने से मन शुद्ध हो जाता है और आत्म-ज्ञान प्राप्त होता है। नाम ईश्वर के अस्तित्व का चिह्न है। नाम में ही राम समाया हुआ है। सच्चिदानंद स्वरूप होने के कारण प्रभु से अपना नाता जोड़ने के लिए नाम जैसा और कोई सरल साधन नहीं है।

सामी साहब कहते हैं कि नाम स्मरण से अंदर का अभिमान दूर हो जाता है। संत तुकाराम महाराज जी ने कहा है कि नाम जपने से दैहिक, भौतिक और दैविक नामक तीन प्रकार के ताप नष्ट हो जाते हैं। नारायण का नाम-स्मरण करने से भक्त प्रह्लाद का उद्धार हो गया। पापी अजामिल को भी मोक्ष मिल गया। राम के नाम से पत्थर भी तैर जाते हैं। संत ज्ञानेश्वर ने नाम की महिमा इस प्रकार वर्णित की है-

एक तत्व नाम दृढ़ धरी मना। हरीसी करुणा येईल तुसी ।
नामपरते तत्त्व नाही रे अन्यथा। वाया आणिक पंथा जाशी क्षणी ॥
(हरिपाठ)